International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

भारत- चीन संबंधों में 14 वें दलाई लामा की भूमिका: एक आनुभाविक अध्ययन

प्रताप दान *

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *प्रताप दान

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14926214

सारांश

भारत और चीन, दो प्राचीन सभ्यताएं, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों से जुड़े रहे हैं, किंतु तिब्बत और दलाई लामा से संबंधित मुद्दों ने इनके द्विपक्षीय संबंधों में जटिलता उत्पन्न की है। 1959 में दलाई लामा द्वारा भारत में शरण के लेने के बाद, तिब्बत मुद्दा दोनों देशों के बीच तनाव का एक महत्वपूर्ण कारण बन गया है। यह शोध-पत्र भारत-चीन संबंधों में 14वें दलाई लामा की भूमिका का आनुभविक विश्लेषण प्रस्तुत करता है जिसमें निर्वासित तिब्बती समुदाय के 240 उत्तरदाताओं का सर्वेक्षण किया गया है, जिसमें उनके भारत-चीन संबंधों, तिब्बत विवाद, और दलाई लामा की भूमिका पर विचार संकलित किए गए। सीमा विवाद, व्यापार असंतुलन, और सांस्कृतिक मतभेद भी इन संबंधों में प्रमुख बाधाएँ हैं। शोध निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि तिब्बत का मुद्दा भारत-चीन संबंधों को गहराई से प्रभावित करता है, और अधिकांश उत्तरदाता इसे एक महत्वपूर्ण कारक मानते हैं। इस अध्ययन में यह भी विश्लेषण किया गया कि भारत और चीन के बीच आपसी सहयोग एवं वार्ता की संभावनाएँ क्या हैं, और किन नीतिगत सुधारों से संबंधों को सुधारने में सहायता मिल सकती है। निष्कर्षतः, यह शोध भारत-चीन संबंधों की संवेदनशीलता को उजागर करते हुए दलाई लामा और तिब्बत मुद्दे के प्रभावों को रेखांकित करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 11-01-2025
- **Accepted:** 03-02-2025
- **Published:** 25-02-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 156-164
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

प्रताप दान. भारत- चीन संबंधों में 14 वें दलाई लामा की भूमिका: एक आनुभाविक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(1):156-164.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

KEYWORDS: भारत-चीन संबंध, तिब्बत विवाद, दलाई लामा, निर्वासित तिब्बती समुदाय, सीमा विवाद, कूटनीति।

परिचय

भारत और चीन, दो प्राचीन सभ्यताएं, दो विशाल जनसंख्या वाले देश, दो उभरती हुई वैश्विक शक्तियां हैं। इन दोनों देशों का संबंध इतिहास के पन्नों में उलझा हुआ है, जिसमें मित्रता, सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष के धागे आपस में गुंथे हुए हैं। यह संबंध जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही जटिल भी। भारत और चीन के बीच संबंध सदियों पुराने हैं। प्राचीन काल में, दोनों देशों के बीच व्यापार, सांस्कृतिक और धार्मिक आदानप्रदान होता था। बौद्ध धर्म का चीन में प्रसार इसका एक प्रमुख उदाहरण है। हालांकि, इन संबंधों में उतारचढ़ाव भी आते रहे। भारत और चीन के संबंध ऐतिहासिक रूप से जटिल रहे हैं, जिनमें तिब्बत और दलाई लामा

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

की भूमिका एक महत्वपूर्ण कारक रही है। 1959 में दलाई लामा के भारत आने के बाद, तिब्बत की स्थिति भारत और चीन के बीच विवाद का एक प्रमुख कारण बन गई। तिब्बत, जो भारत और चीन के बीच एक बफर क्षेत्र की भूमिका निभाता था, अब चीन के नियंत्रण में आ गया है, जिससे भारत की रणनीतिक सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ा है।

प्रस्तुत शोध-पत्र 'भारत-चीन संबंधों में 14वें दलाई लामा की भूमिका: एक आनुभाविक अध्ययन' के अंतर्गत निर्वासित तिब्बती समुदाय के 240 चयनित उत्तरदाताओं द्वारा दी गई व्यक्तिगत सूचनाओं और आंकड़ों को शामिल करने के साथ-साथ भारत-चीन संबंध के बारे में उत्तरदाताओं की जानकारी और जागरूकता का गहनतम आंकलन प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध-पत्र को तीन महत्वपूर्ण भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत जानकारियों को समाहित किया है। जबकि दूसरे भाग में भारत-चीन संबंधों के बारे में उत्तरदाताओं की जागरूकता को शामिल किया गया है। तीसरे भाग में इस विषय के विशेषज्ञों की राय को शामिल किया गया है। इस प्रकार इस शोध-पत्र में भारत-चीन संबंधों को 14वें दलाई लामा के विशेष संदर्भ में उत्तरदाताओं के व्यावहारिक पक्ष का गहनतम विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

भाग-1 उत्तरदाताओं का व्यक्तिगत परिचय

भारत-चीन संबंधों में 14वें दलाई लामा की भूमिका: एक आनुभाविक अध्ययन' में निर्वासित तिब्बती समुदाय के चयनित 240 उत्तरदाताओं के व्यावहारिक पक्ष का गहनतम विश्लेषण व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारियों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इन 240 उत्तरदाताओं में पुरुष और महिलाऐं दोनों ही शामिल है। इसके साथ ही, इन उत्तरदाताओं में विभिन्न आयु वर्ग और शैक्षणिक स्थिति के लोगों को शामिल करने का प्रयास किया गया है।

तिब्बती निर्वासित समुदाय के उत्तरदाताओं की आयु और उनकी लैंगिक स्थिति देखें तो पता चलता है कि कुल चयनित 240 उत्तरदाताओं में से 127 पुरुष उत्तरदाता हैं। जबकि महिला उत्तरदाताओं की संख्या 113 है। अर्थात कुल चयनित उत्तरदाताओं का लैंगिक अनुपात लगभग एक-समान है।

आयु के अनुसार उत्तरदाताओं की स्थिति देखें तो पता चलता है कि सबसे अधिक उत्तरदाता 36 से 50 वर्ष की आयु के बीच के हैं जो कुल चयनित उत्तरदाताओं का 44 प्रतिशत हैं। इसी तरह, सबसे कम आयु के उत्तरदाता 51 वर्ष से अधिक आयु के हैं जिनका प्रतिशत केवल 26 है। जबकि माध्यम स्तर पर 36 से 35 वर्ष की आयु के उत्तरदाता शामिल हैं जो कुल उत्तरदाताओं का लगभग 29 प्रतिशत हैं।

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति देखें तो पता चलता है कि कुल चयनित 240 उत्तरदाताओं में से सबसे अधिक उत्तरदाताओं ने स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की है जो कुल उत्तरदाताओं का लगभग 48 प्रतिशत है। जबकि स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त उत्तरदाताओं की संख्या 107 है जो कुल उत्तरदाताओं का लगभग 45 प्रतिशत है। इसी प्रकार, उच्च शिक्षा प्राप्त उत्तरदाता केवल 4 हैं जिन्होंने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। इसी प्रकार, अन्य कम शैक्षणिक योग्यता वाले उत्तरदाताओं की संख्या केवल 15 है जो कुल उत्तरदाताओं का लगभग 6 प्रतिशत है।

भाग-2 भारत-चीन संबंधों का सामान्य ज्ञान

इस भाग के अंतर्गत विभिन्न तिब्बती निर्वासित समुदाय के उत्तरदाताओं से भारत और चीन के बारे में सामान्य जानकारियों से संबंधित कुछ प्रश्नों को शामिल किया गया है।

1. भारत-चीन संबंधों का इतिहास आप कितना जानते हैं?

तालिका संख्या 4.4

क्रम सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अच्छा	97	40.41
2	अच्छा	92	38.33
3	सामान्य	33	13.75
4	कम	17	7.0
5	बिल्कुल नहीं	00	0.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

तिब्बती निर्वासित समुदाय के उत्तरदाताओं से भारत-चीन संबंधों के बारे में यह पुछा गया कि वे इन संबंधों के इतिहास के बारे में कितना जानते हैं। इस बारे में अधिकांश उत्तरदाता (लगभग 90 प्रतिशत) इन दोनों देशों के इतिहास के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं। केवल 7 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो इस संबंध में कम जानकारी रखते हैं। यह दर्शाता है कि इस समुदाय के अधिकांश लोग इन द्विपक्षीय संबंधों के प्रति जागरूक हैं और ऐतिहासिक संदर्भों को समझते हैं।

2. भारत और चीन के बीच कौनसे प्रमुख विवाद हैं?

तालिका संख्या 4.5

क्रम सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सीमा विवाद	97	40.41
2	व्यापार असंतुलन	18	7.5
3	सांस्कृतिक मतभेद	24	10.0
4	दलाई लामा और तिब्बत मुद्दा	54	22.5
5	उपरोक्त सभी विवाद	47	19.58
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन संबंधों में प्रमुख विवाद के संदर्भ में अधिकांश उत्तरदाताओं (40 प्रतिशत) ने सीमा विवाद को प्रमुख स्थान दिया है। यह दोनों देशों के बीच सबसे पुराना और सबसे जटिल विवाद है। इसी प्रकार कुछ उत्तरदाताओं (लगभग 7 प्रतिशत) ने दोनों देशों के बीच व्यापार असंतुलन को प्रमुख विवाद माना है। भारत और चीन के बीच व्यापार में चीन का पलड़ा भारी है। कुछ उत्तरदाताओं (10 प्रतिशत) ने दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक मतभेदों को भी एक विवाद माना है। इसी तरह, लगभग 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने दलाई लामा और तिब्बत के मुद्दे दोनों देशों के बीच एक प्रमुख विवाद के रूप में रेखांकित किया है। चयनित 240 उत्तरदाताओं में से केवल 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उपरोक्त सभी को दोनों देशों के बीच प्रमुख विवाद माना है।

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. भारत-चीन सीमा विवाद का मूल कारण क्या है?

तालिका संख्या 4.6

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	औपनिवेशिक कारण	44	18.33
2	चीन की महत्वाकांक्षा	78	32.5
3	एक चीन की नीति	53	22.0
4	दलाई लामा और तिब्बत मुद्दा	33	13.75
5	अन्य कारण:.....	32	13.33
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन सीमा विवाद के मूल कारणों के संदर्भ में कुछ उत्तरदाताओं (18 प्रतिशत) ने इसे औपनिवेशिक कारण माना है कि यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की देन है। जबकि 33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे चीन की महत्वाकांक्षा की देन बताया है। चीन अपनी क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के तहत कुछ क्षेत्रों पर अपना दावा करता है, जिन्हें भारत अपना मानता है। इसी प्रकार, 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे चीन द्वारा एक चीन की नीति के अनुसरण का परिणाम माना है। जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे तिब्बत से जोड़कर देखा है। दलाई लामा और तिब्बत का मुद्दा भी सीमा विवाद से जुड़ा हुआ है। चीन दलाई लामा को एक अलगाववादी मानता है और भारत पर उन्हें समर्थन देने का आरोप लगाता है। कुछ उत्तरदाताओं ने अन्य कारण भी बताए हैं जिसमें तिब्बत की स्वायत्ता का मुद्दा आदि शामिल है।

4. क्या आप मानते हैं कि दोनों देशों के बीच आपसी सहयोग संभव है?

तालिका संख्या 4.7

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	104	43.33
2	नहीं	78	32.5
3	निश्चित नहीं	58	24
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत और चीन के बीच आपसी सहयोग की संभावना एक जटिल मुद्दा है। कई कारक हैं जो इस संभावना को प्रभावित करते हैं, जिनमें दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक संबंध, सीमा विवाद, व्यापारिक संबंध और वैश्विक मंच पर उनकी भूमिका शामिल है। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 43.33% उत्तरदाता मानते हैं कि दोनों देशों के बीच आपसी सहयोग संभव है, जबकि 32.5% उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं। 24% उत्तरदाता अनिश्चित हैं। यह दर्शाता है कि इस मुद्दे पर लोगों की राय बंटी हुई है।

भाग 3: दलाई लामा और तिब्बत मुद्दा

शोध के इस भाग के अंतर्गत तिब्बती निर्वासित समुदाय के उत्तरदाताओं से भारत-चीन संबंधों के संदर्भ में दलाई लामा की भूमिका और तिब्बत मुद्दे के बारे में विभिन्न सवाल पूछे गए हैं।

5. क्या मई, 1951 में तिब्बत-चीन के बीच 17 बिन्दुओं वाला समझौता चीन में तिब्बत के विलय का कारण बना?

तालिका संख्या 4.8

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	74	30.83
2	नहीं	128	53.33
3	कोई टिप्पणी नहीं	38	15.83
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

मई 1951 में तिब्बत और चीन के बीच हुए 17-सूत्रीय समझौते को लेकर विभिन्न विद्वानों और इतिहासकारों में गहरे मतभेद हैं। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 30.83% उत्तरदाता मानते हैं कि यह समझौता तिब्बत के चीन में विलय का कारण बना, जबकि 53.33% उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं। 15.83% उत्तरदाताओं ने कोई टिप्पणी नहीं की। यह दर्शाता है कि इस मुद्दे पर तिब्बती निर्वासित समुदाय के लोगों की राय बंटी हुई है।

06. क्या यह समझौता वैध था?

तालिका संख्या 4.9

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	22	9.16
2	नहीं	178	74.16
3	कोई टिप्पणी नहीं	40	16.66
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 74.16% उत्तरदाता मानते हैं कि यह समझौता वैध नहीं था, जबकि केवल 9.16% उत्तरदाता इसे वैध मानते हैं। 16.66% उत्तरदाताओं ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की। यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस समझौते को वैध नहीं मानते हैं।

7. चीन द्वारा तिब्बत के अधिग्रहण को आप किस रूप में देखते हैं?

तालिका संख्या 4.10

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	वैध	00	0.0
2	अवैध	228	95.0
3	कोई टिप्पणी नहीं	12	5.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

तिब्बत पर चीन के अधिग्रहण को वैध या अवैध मानना एक जटिल मुद्दा है। इसके बारे में उत्तरदाताओं की कोई निश्चित राय नहीं है। उपरोक्त दी गई तालिका से पता चलता है कि 95% उत्तरदाता चीन द्वारा तिब्बत के अधिग्रहण को अवैध मानते हैं, जबकि 0% उत्तरदाता इसे वैध मानते हैं। 5% उत्तरदाताओं ने कोई टिप्पणी नहीं की। यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस अधिग्रहण को अवैध मानते हैं।

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

8. आपके अनुसार दलाई लामा और तिब्बत का मुद्दा कितना महत्वपूर्ण है?

तालिका संख्या 4.11

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	बहुत महत्वपूर्ण	118	49.16
2	महत्वपूर्ण	84	35.0
3	कम महत्वपूर्ण	38	15.83
4	बिल्कुल महत्वपूर्ण नहीं	00	0.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

दलाई लामा और तिब्बत का मुद्दा एक जटिल और संवेदनशील मुद्दा है। यह न केवल तिब्बत के लोगों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत और चीन के आपसी संबंधों के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस मुद्दे का शांतिपूर्ण समाधान निकालना जरूरी है। ऊपर दी गई तालिका से पता चलता है कि 49.16% उत्तरदाता दलाई लामा और तिब्बत के मुद्दे को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि वे इसे अपनी मातृभूमि के रूप में देखते हैं। जबकि 35% उत्तरदाता इसे महत्वपूर्ण मानते हैं। 15.83% उत्तरदाता इसे कम महत्वपूर्ण मानते हैं। कोई भी उत्तरदाता इसे बिल्कुल महत्वपूर्ण नहीं मानता है। यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस मुद्दे को महत्वपूर्ण मानते हैं।

9. दलाई लामा और तिब्बत का मुद्दा भारत-चीन संबंधों को कितना प्रभावित करता है?

तालिका संख्या 4.12

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	बहुत अधिक	66	27.5
2	मध्यम	124	51.66
3	कम	38	15.83
	बिल्कुल नहीं	12	5.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

दलाई लामा और तिब्बत का मुद्दा भारत-चीन संबंधों को कई तरह से प्रभावित करता है। यह एक जटिल और संवेदनशील मुद्दा है, जिसके दोनों देशों के बीच संबंधों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़ते हैं। उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि 27.5% उत्तरदाता मानते हैं कि दलाई लामा और तिब्बत का मुद्दा भारत-चीन संबंधों को बहुत अधिक प्रभावित करता है, जबकि 51.66% उत्तरदाता इसे मध्यम रूप से प्रभावित मानते हैं। 15.83% उत्तरदाता इसे कम प्रभावित मानते हैं, जबकि 5% उत्तरदाता इसे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं मानते हैं। यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता इस मुद्दे को भारत-चीन संबंधों के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं।

10. क्या आपको लगता है कि दलाई लामा के निर्वासन में आने का उद्देश्य अपने अस्तित्व को बचाए रखना नहीं, बल्कि उससे भी बड़ा है?

तालिका संख्या 4.13

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	195	81.25
2	नहीं	40	16.66
3	कोई टिप्पणी नहीं	05	2.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

तिब्बत पर चीन द्वारा नियंत्रण करने के पश्चात् दलाई लामा द्वारा भारत में शरण ली गई। दलाई लामा के निर्वासन में आने के उद्देश्यों को लेकर कई तरह की राय हैं। ऊपर दी गई तालिका से पता चलता है कि 81.25% उत्तरदाता मानते हैं कि दलाई लामा के निर्वासन में आने का उद्देश्य अपने अस्तित्व को बचाए रखने से कहीं अधिक बड़ा था, जबकि 16.66% उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते हैं। केवल 2% उत्तरदाताओं ने कोई टिप्पणी नहीं की। यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता दलाई लामा के निर्वासन में आने के उद्देश्यों को काफी व्यापक मानते हैं।

11. वह उद्देश्य इनमें से क्या है?

तालिका संख्या 4.14

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	तिब्बत को चीन के आधिपत्य से मुक्त कराना	92	38.33
2	तिब्बतियों की सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखना	50	20.83
3	तिब्बत की वर्तमान स्थिति से विश्व को अवगत कराना	98	40.83
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 38.33% उत्तरदाता मानते हैं कि दलाई लामा के निर्वासन का मुख्य उद्देश्य तिब्बत को चीन के आधिपत्य से मुक्त कराना था, जबकि 20.83% उत्तरदाता मानते हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य तिब्बतियों की सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखना था। 40.83% उत्तरदाता मानते हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य तिब्बत की वर्तमान स्थिति से विश्व को अवगत कराना था। यह दर्शाता है कि उत्तरदाताओं की राय इस मुद्दे पर बंटी हुई है।

12. क्या आप भारत की वर्तमान तिब्बत नीति का समर्थन करते हैं?

तालिका संख्या 4.15

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	96	40.0
2	नहीं	102	42.5
3	कोई टिप्पणी नहीं	42	17.5
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारत की तिब्बत नीति हमेशा से ही एक जटिल और संवेदनशील मुद्दा रही है। इस नीति के तहत भारत ने दलाई लामा और उनके समर्थकों को शरण दी है, लेकिन साथ ही चीन की संप्रभुता का भी सम्मान किया है। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 40% उत्तरदाता भारत की वर्तमान तिब्बत नीति का समर्थन करते हैं, जबकि 42.5% उत्तरदाता इसका समर्थन नहीं करते हैं। 17.5% उत्तरदाताओं ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की। यह दर्शाता है कि इस मुद्दे पर तिब्बती निर्वासित समुदाय की राय बंटी हुई है।

13. क्या चीन की वर्तमान तिब्बत नीति सही है?

तालिका संख्या 4.16

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	00	0.0
2	नहीं	228	95.0
3	कोई टिप्पणी नहीं	12	5.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

शोध सर्वेक्षण के अनुसार, 95% उत्तरदाताओं ने चीन की तिब्बत नीति को गलत बताया। इसका अर्थ है कि अधिकांश लोग चीन की तिब्बत नीति से असंतुष्ट हैं और इसे अनुचित मानते हैं। केवल 5% उत्तरदाताओं ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं दी है, जो यह दर्शाता है कि यह विषय संवेदनशील और राजनीतिक रूप से जटिल है।

14. अगर सही नहीं है, तो क्या कारण है?

तालिका संख्या 4.17

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	मानवाधिकारों का उल्लंघन	14	6.14
2	तिब्बती पहचान और सांस्कृतिक विरासत को नष्ट करना	08	3.50
3	सामाजिक संरचना में बदलाव	08	3.50
4	उपरोक्त सभी कारण	198	86.84
कुल उत्तरदाता		228	100

स्रोत: शोध सर्वे

पिछले शोध सर्वेक्षण (तालिका 4.16) में यह स्पष्ट हुआ कि 95% उत्तरदाताओं ने चीन की तिब्बत नीति को गलत बताया। अब तालिका 4.17 में इसका विस्तृत विश्लेषण किया गया है कि आखिर लोग इस नीति को गलत क्यों मानते हैं। इस सर्वेक्षण के अनुसार, 86.84% उत्तरदाताओं ने उपरोक्त सभी कारण को चुना है, जो यह दर्शाता है कि चीन की तिब्बत नीति को लेकर असंतोष केवल एक पहलू तक सीमित नहीं है, बल्कि कई महत्वपूर्ण कारणों से उपजा है।

15. क्या आपको लगता है कि भारत में निर्वासित तिब्बती सरकार तिब्बतियों के हितों की रक्षा कर पा रही है?

तालिका संख्या 4.18

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	85	35.41
2	नहीं	122	50.83
3	कोई टिप्पणी नहीं	33	13.75
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

निर्वासित तिब्बती सरकार की भूमिका और प्रभावशीलता को लेकर किए गए इस शोध सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं की विभिन्न राय सामने आई हैं। इस संदर्भ में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने वाले 35.41% उत्तरदाताओं का मानना है कि निर्वासित तिब्बती सरकार तिब्बतियों के हितों की रक्षा कर पा रही है। नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने वाले 50.83% उत्तरदाता यह मानते हैं कि निर्वासित तिब्बती सरकार तिब्बतियों के हितों की रक्षा नहीं कर पा रही है। वहीं, 13.75% उत्तरदाताओं ने कोई टिप्पणी नहीं की है, जो यह दर्शाता है कि कुछ लोग इस मुद्दे पर स्पष्ट राय नहीं रखते या वे इस विषय में रुचि नहीं लेते।

16. अगर नहीं तो क्यों?

तालिका संख्या 4.19

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	स्वतंत्रता का अभाव	04	3.27
2	अधिकारों का अभाव	09	7.37
3	संप्रभु क्षेत्र का अभाव	16	13.0
	तिब्बतियों का अविश्वास	00	0.0
	उपरोक्त सभी कारण	93	76.22
कुल उत्तरदाता		122	100

स्रोत: शोध सर्वे

पिछली तालिका (4.18) में देखा गया कि 50.83% उत्तरदाताओं ने यह माना कि निर्वासित तिब्बती सरकार तिब्बतियों के हितों की रक्षा नहीं कर पा रही है। इस तालिका (संख्या 4.19) के माध्यम से उन कारणों को समझने का प्रयास किया गया है, जिनकी वजह से लोग इस सरकार को अप्रभावी मानते हैं। कुछ उत्तरदाता (3.27%) यह मानते हैं कि निर्वासित तिब्बती सरकार की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वह तिब्बत को चीन से स्वतंत्र कराने में सफल नहीं रही है। कुछ लोगों (7.37%) के अनुसार निर्वासित तिब्बती सरकार अपने समुदाय को पूर्ण नागरिक अधिकार दिलाने में सफल नहीं रही है। कुछ उत्तरदाताओ (13.0%) का यह मानना है कि निर्वासित सरकार का कोई भौगोलिक संप्रभु क्षेत्र नहीं है, जिससे उसकी कार्यक्षमता सीमित हो जाती है। अधिकांश उत्तरदाता (76.22%) यह मानते हैं कि निर्वासित तिब्बती सरकार की अप्रभावशीलता का मात्र एक कारण नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता, अधिकार, संप्रभुता और अविश्वास सभी कारण इसमें शामिल हैं। इसका अर्थ यह है कि यह समस्या बहुआयामी है और केवल किसी एक मुद्दे को हल करने

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

से तिब्बती सरकार अधिक प्रभावी नहीं बन सकती। इसे सुधारने के लिए व्यापक स्तर पर रणनीतिक बदलाव और नीतिगत सुधार आवश्यक हैं।

17. क्या आपको लगता है कि चीन तिब्बत में मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहा है?

तालिका संख्या 4.20

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	240	100.0
2	नहीं	00	0.0
3	कोई टिप्पणी नहीं	00	0.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

तिब्बत में चीन द्वारा मानवाधिकारों का उल्लंघन एक गंभीर समस्या है। इस शोध सर्वेक्षण (तालिका संख्या 4.20) से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि सभी उत्तरदाता (100%) इस बात से सहमत हैं कि चीन तिब्बत में मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहा है। चीन द्वारा तिब्बत में धार्मिक स्वतंत्रता पर हमले, भाषाई दमन, जबरन निगरानी, जनसांख्यिकीय बदलाव और संसाधनों के शोषण के कारण तिब्बती समुदाय संकट में है। इसे रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

18. दलाई लामा को भारत में शरण देने के निर्णय को आप कैसे देखते हैं?

तालिका संख्या 4.21

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक	240	100.0
2	नकारात्मक	00	0.0
3	तटस्थ	00	0.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

दलाई लामा ने चीन द्वारा तिब्बत के अधिग्रहण करने के पश्चात् भारत में शरण ली थी। दलाई लामा द्वारा भारत में शरण लेने के निर्णय को सभी (100%) निर्वासित तिब्बती उत्तरदाताओं ने इसका सकारात्मक रूप से प्रबल समर्थन किया है। उनके अनुसार इससे वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने में कुछ हद तक सफल हुए हैं। इस संदर्भ में किसी भी उत्तरदाता ने दलाई लामा के इस निर्णय को नकारात्मक या तटस्थ रूप में नहीं देखा है।

19. भारत में दलाई लामा की उपस्थिति से चीन के प्रति भारत की नीति पर क्या प्रभाव पड़ा है?

तालिका संख्या 4.22

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक	21	8.75
2	नकारात्मक	176	73.33
3	कोई प्रभाव नहीं	43	18.0
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन संबंधों पर दलाई लामा की उपस्थिति के प्रभाव के संदर्भ में लगभग एक-चौथाई उत्तरदाताओं (73.33%) ने इसे नकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा है। उनके अनुसार इससे दोनों देशों के बीच सीमा विवाद और तनाव बढ़ा बढ़ा है। इसके साथ ही, भारत-चीन व्यापारिक सहयोग पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। कुछ उत्तरदाताओं (18%) का मानना है कि भारत-चीन संबंध पहले से ही जटिल हैं और दलाई लामा की उपस्थिति केवल एक मामूली कारक है और इससे दोनों देशों के आपसी संबंधों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। उनके अनुसार, सीमा विवाद, भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, और आर्थिक हित ही दोनों देशों के प्रमुख मुद्दे हैं, न कि दलाई लामा का मुद्दा।

कुछ उत्तरदाताओं (8.75%) ने इसे सकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा है। उनके अनुसार इससे भारत को दुनिया में एक मानवतावादी और लोकतांत्रिक देश के रूप में पहचान मिली है। दलाई लामा की उपस्थिति ने भारत को तिब्बत मुद्दे पर नैतिक नेतृत्व प्रदान किया है।

20. तिब्बत के मुद्दे पर भारत और चीन के बीच वार्ता के लिए आपकी राय क्या है?

तालिका संख्या 4.23

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	आवश्यक	155	64.50
2	अनावश्यक	44	18.33
3	कोई राय नहीं	41	17.17
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

तिब्बत मुद्दे पर भारत-चीन वार्ता की आवश्यकता के संदर्भ में 64.50% उत्तरदाताओं ने इस वार्ता का समर्थन किया है। उनके अनुसार इससे सीमा विवाद का समाधान और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि 18.33% उत्तरदाताओं ने इस वार्ता को अनावश्यक माना है। उनके मत में चीन तिब्बत को अपना अभिन्न अंग मानता है और इस पर किसी भी प्रकार की वार्ता को स्वीकार नहीं करता है। कुछ उत्तरदाता (17.17%) इस विषय पर स्पष्ट राय नहीं रखते हैं, क्योंकि संभवतः उन्हें तिब्बत मुद्दे और भारत-चीन संबंधों की जटिलता की पूरी जानकारी नहीं है।

21. क्या आपको लगता है कि भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच भारत की तिब्बत नीति के प्रति अलग-अलग नजरिया है?

तालिका संख्या 4.24

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	90	37.5
2	नहीं	129	53.75
3	कोई टिप्पणी नहीं	21	8.75
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत की तिब्बत नीति हमेशा से संयमित और यथास्थितिवादी रही है। तिब्बती निर्वासित समुदाय के 37.5% उत्तरदाता मानते हैं कि भारत के विभिन्न राजनीतिक दल भारत की तिब्बत नीति के प्रति अलग-अलग नजरिया रखते हैं।

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत कठोर और चीन विरोधी रहा है। 2014 के बाद से, भाजपा सरकार ने चीन के प्रति सख्त रुख अपनाया है, विशेषकर डोकलाम विवाद (2017) और गलवान संघर्ष (2020) के बाद। कांग्रेस पार्टी परंपरागत रूप से तिब्बत मुद्दे पर चीन के साथ संतुलित संबंधों की नीति अपनाती रही है। 1954 में नेहरू सरकार ने चीन के साथ पंचशील समझौता किया, जिसमें तिब्बत को चीन का हिस्सा स्वीकार किया गया। हालांकि वामपंथी दलों का झुकाव हमेशा से चीन समर्थक रहा है। वे तिब्बत के मुद्दे को चीन का आंतरिक मामला मानते हैं और भारत को इसमें हस्तक्षेप न करने की सलाह देते हैं।

इस संदर्भ में लगभग आधे से अधिक उत्तरदाताओं (53.75%) ने कहा है कि तिब्बत नीति पर भारत के राजनीतिक दलों के बीच कोई बड़ा अंतर नहीं है और यह अभी भी स्थिर बनी हुई है। भले ही विभिन्न दलों के दृष्टिकोण अलग-अलग हों, लेकिन भारत सरकार की आधिकारिक नीति में ज्यादा बदलाव नहीं हुआ है। सभी सरकारों ने दलाई लामा को भारत में शरण देने का समर्थन किया है, लेकिन तिब्बत की स्वतंत्रता का खुलकर समर्थन नहीं किया है। कुछ उत्तरदाता (8.75%) इस मुद्दे पर कोई स्पष्ट राय नहीं रखते, क्योंकि संभवतःउन्हें भारत की तिब्बत नीति की पूरी जानकारी नहीं है।

22. क्या आपको लगता है कि भारत में विभिन्न सरकारों के कार्यकाल के दौरान भारत की तिब्बत के प्रति नीति में परिवर्तन होता रहा है?

तालिका संख्या 4.25

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	75	31.25
2	नहीं	126	52.50
3	कोई टिप्पणी नहीं	39	16.25
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत की तिब्बत नीति में विभिन्न सरकारों के कार्यकालों के दौरान बदलाव के संदर्भ में 31.25% उत्तरदाताओं ने माना है कि इसमें परिवर्तन आया है। जबकि 52.50% ने विचार व्यक्त किया है कि इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है क्योंकि लगभग सभी सरकारों ने 'एक चीन नीति' का पालन किया है। भले ही भाजपा और कांग्रेस की सरकारें अलग-अलग रही हों, लेकिन भारत की आधिकारिक नीति तिब्बत को चीन का हिस्सा मानने की रही है। कुछ उत्तरदाता 16.25% इस मुद्दे पर कोई स्पष्ट राय नहीं रखते हैं। उनके अनुसार उन्हें भारत की तिब्बत नीति में हुए बदलावों की पूरी जानकारी नहीं है।

भाग 4: आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध

इस भाग के अंतर्गत भारत और चीन के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग के संदर्भ में विभिन्न प्रश्नों को शामिल किया गया है कि किस प्रकार उपरोक्त क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देकर दोनों देशों के आपसी संबंधों को सुधारा जा सकता है।

29. भारत और चीन के बीच व्यापारिक संबंधों को आप कैसे देखते हैं?

तालिका संख्या 4.26

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	मजबूत	82	34.16
2	सामान्य	126	52.50
3	कमजोर	32	16.25
4	कोई राय नहीं	00	13.33
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

वर्तमान में भारत और चीन व्यापारिक संबंधों की मजबूती के संदर्भ में 34.16% उत्तरदाताओं ने माना है कि दोनों देशों के बीच मजबूत व्यापारिक संबंध कायम हुए हैं और द्विपक्षीय व्यापार में निरंतर वृद्धि हुई है। कुछ उत्तरदाताओं (52.50%) ने इसे सामान्य माना है। उनके अनुसार, भारत और चीन के बीच कोई व्यापक मुक्त व्यापार समझौता नहीं है और भारत को चीन के साथ व्यापार घाटे की समस्या का सामना करना पड़ता है। हालांकि 16.25% उत्तरदाताओं ने इसे कमजोर माना है। उनके मत में भारत का व्यापार घाटा चीन के साथ 100 अरब डॉलर से अधिक है। भारत चीन से आयात पर अत्यधिक निर्भर है, लेकिन चीन भारत से सीमित वस्तुएँ ही खरीदता है। इसके कारण दोनों देशों के बीच व्यापारिक असंतुलन बना हुआ है। इस प्रकार, भारत-चीन व्यापारिक संबंध सामान्य हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में मजबूती और कुछ में कमजोरी दिखाई देती है।

30. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से क्या दोनों देशों के संबंध बेहतर हो सकते हैं?

तालिका संख्या 4.27

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	128	53.33
2	नहीं	102	42.50
3	सुनिश्चित नहीं	10	4.16
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान से आपसी संबंधों को बेहतर किए जाने के संदर्भ में लगभग आधे उत्तरदाताओं (53.33%) ने सहमति व्यक्त की है। उनके अनुसार इससे दोनों देशों के बीच आपसी समझ विकसित होगी। जबकि 42.50% उत्तरदाताओं ने इसे बेहतर विकल्प नहीं माना है। उनके अनुसार चीन के आक्रामक रवैये और सीमा विवाद के कारण सांस्कृतिक संबंधों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

कुछ उत्तरदाता (4.16%) इस बारे में अनिश्चित हैं कि सांस्कृतिक सहयोग से दोनों देशों के संबंधों में सुधार होगा या नहीं। वे मानते हैं कि इससे कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा।

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

31. दोनों देशों के बीच शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आपकी राय क्या है?

तालिका संख्या 4.28

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक	186	77.50
2	नकारात्मक	42	17.50
3	कोई राय नहीं	12	5.00
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन के बीच शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग उपयोगी होगा अथवा नहीं। इस संदर्भ में लगभग एक-चौथाई (77.50%) उत्तरदाताओं ने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। उनके अनुसार, भारत और चीन दोनों ही AI, मशीन लर्निंग, अंतरिक्ष अनुसंधान, बायोटेक, और फार्मास्युटिकल क्षेत्रों में अग्रणी हैं और इन क्षेत्रों में संयुक्त वैज्ञानिक अनुसंधान से दोनों देशों को फायदा होगा। हालांकि इस बारे में 17.50% उत्तरदाताओं ने नकारात्मक राय व्यक्त की है। उनके मत में दोनों देशों के बीच सीमा विवाद और रणनीतिक मतभेद शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग को सीमित कर सकते हैं। कुछ उत्तरदाता (5%) इस बारे में अनिश्चित रुख अपनाया हैं कि शैक्षिक और वैज्ञानिक सहयोग लाभकारी होगा या नहीं। शायद वे मानते हैं कि इससे कुछ हद तक मदद मिलेगी, लेकिन कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा।

भाग 5: भविष्य के दृष्टिकोण और सुझाव

इस भाग के अंतर्गत भारत-चीन संबंधों तथा तिब्बत मुद्दे के संदर्भ में भविष्य के दृष्टिकोण से सबंधित प्रश्नों को शामिल किया गया है जिसमें दोनों देशों के बीच आपसी संबंधों को सुधारने के लिए उठाए जाने वाले भविष्य के कदमों, विभिन्न बाधाओं, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका और तिब्बत मुद्दे से जुड़े सवाल तिब्बती निर्वासित समुदाय से पूछे गए हैं।

32. भारत-चीन संबंधों को सुधारने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए जाने चाहिए?

तालिका संख्या 4.29

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सीमा विवाद सुलझाना	122	50.83
2	व्यापार और निवेश बढ़ाना	82	34.16
3	सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन	36	15.00
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन संबंध सुधारने के लिए संभावित कदमों के संदर्भ में आधे से अधिक (50.83%) उत्तरदाताओं ने दोनों देशों के बीच सीमा विवाद सुलझाने को प्राथमिकता दी है। उनके अनुसार, सीमा विवाद भारत-चीन संबंधों में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है। कुछ उत्तरदाताओं (34.16%) ने दोनों देशों के संबंधों को सुधारने के लिए व्यापार और निवेश बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया है जिससे संबंधों में स्थिरता आएगी। कुछ उत्तरदाताओं (15%) ने दोनों देशों के संबंधों को सुधारने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनो को बढ़ावा देने का समर्थन किया है क्योंकि भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान बहुत पुराना है। हालाँकि सांस्कृतिक कार्यक्रम दोनों देशों के संबंध सुधारने में मदद कर सकते हैं, लेकिन यह अकेले कोई स्थायी विकल्प नहीं है।

33. आपके अनुसार भारत-चीन संबंधों में सुधार की सबसे बड़ी बाधा क्या है?

तालिका संख्या 4.30

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सीमा विवाद	128	53.33
2	व्यापार असंतुलन	30	12.50
3	तिब्बत का मुद्दा	82	34.16
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत-चीन संबंधों में सुधार प्रमुख बाधाओं के संदर्भ में आधे से कुछ अधिक उत्तरदाताओं (53.33%) ने विचार व्यक्त किया है कि दोनों देशों के संबंधों में सुधार की सबसे बड़ी बाधा सीमा विवाद है क्योंकि भारत और चीन के बीच लंबी सीमा रेखा है, जो अस्पष्ट और विवादित बनी हुई है और इसको लेकर दोनों देशों के बीच युद्ध (1962) भी हो चुका है। अनेक बार दोनों देशों के सैनिकों के बीच झड़प भी हो चुकी है।
कुछ उत्तरदाताओं (34.16%) का मानना है कि तिब्बत का मुद्दा भी दोनों देशों के आपसी संबंध सुधार में एक बाधा बना हुआ है। 1959 में दलाई लामा को भारत में शरण देने के बाद से तिब्बत विवाद भारत-चीन संबंधों में एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। केवल कुछ उत्तरदाताओं (12.50%) ने व्यापार असंतुलन को दोनों देशों के संबंध सुधार की बाधा माना है।

34. क्या आप मानते हैं कि दोनों देशों के बीच मध्यस्थता के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की भूमिका होनी चाहिए?

तालिका संख्या 4.31

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	101	42.08
2	नहीं	126	52.50
3	कोई टिप्पणी नहीं	13	5.41
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत और चीन के बीच विभिन्न विवादों और समस्याओं के समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की मध्यस्थता का 42.08% उत्तरदाताओं ने इसका समर्थन किया है। उनके अनुसार विश्व के विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थान जैसे संयुक्त राष्ट्र (UN), अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (ICJ), और अन्य वैश्विक संस्थाएं निष्पक्ष समाधान ला सकती हैं। हालांकि आधे से अधिक (52.50%) उत्तरदाता अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के खिलाफ हैं। उनके मत में, भारत और चीन दोनों वैश्विक शक्ति और संप्रभु देश हैं। वे अपने विवादों को द्विपक्षीय वार्ता से हल करना पसंद करते हैं और तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करते हैं। इसके साथ ही, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भी सीमाएं हैं क्योंकि UN सुरक्षा परिषद में चीन एक स्थायी

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सदस्य है और वह किसी भी प्रस्ताव को वीटो कर सकता है। अतः अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता से ज्यादा प्रभावी विकल्प द्विपक्षीय वार्ता और कूटनीति है। केवल 5% उत्तरदाताओं ने इस बारे में कोई राय व्यक्त नहीं की है। उनके अनुसार वे इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं।

35. क्या आपको लगता है कि भारत और चीन तिब्बत मुद्दे पर एक समझौता कर सकते हैं?

तालिका संख्या 4.32

क्र. सं.	उत्तरदाता की राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	75	31.25
2	नहीं	137	57.08
3	कोई टिप्पणी नहीं	28	11.6
कुल उत्तरदाता		240	100

स्रोत: शोध सर्वे

भारत और चीन के बीच तिब्बत मुद्दे पर भविष्य में समझौते के बारे में आधे से अधिक (57.08%) उत्तरदाताओं की राय है कि उनके बीच में भविष्य में भी इस मुद्दे पर कोई समझौता संभव नहीं है क्योंकि इसमें कई बाधाएं विद्यमान हैं। चीन का कठोर रूख, दलाई लामा और निर्वासित तिब्बती सरकार की भारत में उपस्थिति और दोनों देशों के बीच सीमा विवाद और तनाव आदि शामिल है। हालाँकि कुछ उत्तरदाताओं (31.25%) की राय है कि दोनों देशों के बीच तिब्बत मुद्दे पर समझौता संभव हो सकता है क्योंकि दोनों देशों के आर्थिक और व्यापारिक संबंध वर्तमान में काफी अच्छे हैं और उनके बीच व्यापारिक निर्भरता भी लगातार बढ़ रही है। यदि भविष्य में व्यापार और निवेश प्राथमिकता बनते हैं, तो तिब्बत जैसे संवेदनशील मुद्दे पर नरम रुख अपनाया जा सकता है। कुछ उत्तरदाताओं (11.6%) ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है। उनके मत में इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच भविष्य में समझौता होगा या नहीं। वे इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहते हैं।

निष्कर्ष

तिब्बत और दलाई लामा का मुद्दा भारत-चीन संबंधों में एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील कारक बना हुआ है। 1959 में दलाई लामा के भारत आगमन के बाद से यह विवाद दोनों देशों के बीच राजनयिक मतभेदों, सीमा संघर्ष और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करता रहा है। तिब्बती निर्वासित समुदाय इस मुद्दे को अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक अस्मिता से जोड़कर देखता है, जबकि चीन इसे अपनी संप्रभुता का विषय मानता है। भारत, एक संतुलित नीति अपनाते हुए, दलाई लामा को शरण देने के साथ-साथ चीन की संप्रभुता को भी स्वीकार करता रहा है। इस सर्वेक्षण में शामिल उत्तरदाताओं की राय के अनुसार, भारत-चीन संबंधों में सुधार के लिए सीमा विवाद का समाधान, व्यापारिक असंतुलन को कम करना और सांस्कृतिक-शैक्षिक सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। हालाँकि, तिब्बत मुद्दे को लेकर दोनों देशों की नीतियाँ भिन्न हैं, और यह दीर्घकालिक रूप से उनके आपसी संबंधों में तनाव का कारण बना रह सकता है। यह शोध यह भी इंगित करता है कि भारत और चीन के बीच कूटनीतिक वार्ता और आपसी सहयोग बढ़ाने के प्रयास से इस तनाव को कम किया जा सकता है। निष्कर्षतः भारत-चीन संबंधों की स्थिरता के लिए तिब्बत मुद्दे का संतुलित समाधान खोजना आवश्यक है, जो दोनों देशों की भू-राजनीतिक और आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शाकाब्पा WD. तिब्बत: अ पॉलिटिकल हिस्ट्री. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस; 1967.
2. बेल चार्ल्स. पोर्ट्रेट ऑफ़ दलाई लामा: दी लाइफ एंड टाईम्स ऑफ़ दी ग्रेट थर्टीन्थ (1946). लंदन: विजडम पब्लिकेशंस; 1987.
3. डेशिंगकर जी. इंडिया-चाईना रिलेशन्स: दी नेहरू ईयर्स. चाईना रिपोर्ट. 1991;27(2):85-100.
4. कोलस अशील्ड. तिब्बतन नेशनलिज्म: दी पॉलिटिक्स ऑफ़ रिलिजन. जर्नल ऑफ़ पीस रिसर्च. 1996;33(1):51-66.
5. गोल्डस्टीन मेल्विन सी. द स्नो लायन एंड द ड्रैगन: चाइना, तिब्बत, एंड द दलाई लामा. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस; 1997.
6. मैकग्रानाहन के. अरार्ची इन द फॉर्म ऑफ ए गवर्नमेंट: द पॉलिटिक्स ऑफ तिब्बत'स डायस्पोरा. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस; 2010.
7. स्मिथ वारेन डब्ल्यू. दी सर्वाइवल ऑफ़ तिब्बतन कल्चर. सर्वाइवल क्वार्टर्ली. 2010 फरवरी 19.
8. कुजमिन एसएल. हिडन तिब्बत: हिस्ट्री ऑफ़ इंडिपेंडेंस एंड ऑक्युपेशन. धर्मशाला: लाइब्रेरी ऑफ़ तिब्बतन वर्क्स एंड आर्काइव्ज; 2010.
9. सीकरी राजीव. तिब्बत फैक्टर इन इंडिया चाईना रिलेशन्स. जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल अफेयर्स. 2011;64(2):55-71.
10. कुमार रविंद्र. भारत-चीन संबंध: अतीत और वर्तमान. दिल्ली: लोकहित प्रकाशन; 2012.
11. अग्निहोत्री कुलदीप चंद. भारत-चीन संबंध और तिब्बत मुक्ति साधना. दिल्ली: लोकहित प्रकाशन; 2012.
12. आकाश अभिनय. तिब्बत, चीन और दलाई लामा के त्रिकोण का विश्लेषण. प्रभासाक्षी. 2020 जुलाई 22.
13. पंत हर्ष वी. गलवान संघर्ष: भारत को अपनी तिब्बत नीति को ठीक करना है ज़रूरी. आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन. 2021 जुलाई 10.
14. हैदर सुहासिनी. भारत की तिब्बत नीति. द हिन्दू. 2021 जुलाई 09.
15. मित्तल कामिनी. इंडिया-तिब्बत रिलेशन्स. दिल्ली: सुमित इंटरप्राइजेज; 2023.
16. व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा एकत्रित शोध सर्वेक्षण आंकड़ें.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 प्रताप दान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/